International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 03-04

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 03-04
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-05-2019
Accepted: 06-06-2019

डॉ. देवेश प्रकाश आर्य
आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, भारत

Correspondence
डॉ. देवेश प्रकाश आर्य
आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, भारत

वेदों में राष्ट्रप्रेम की उदात्त भावना

डॉ. देवेश प्रकाश आर्य

प्रस्तावना

'वेद' भारत ही नहीं अपितु विश्व के समस्त मनीषियों के लिये ज्ञान–स्रोत है। ज्ञानार्थक 'विद्' धतु से 'वेद' शब्द बना है, जिसका अर्थ होता है ज्ञान प्राप्त करना। किसी विषय का ज्ञान उसे जानकर ही किया जा सकता है। इस प्रकार 'वेद' शब्द ज्ञान का पर्याय है।

वेदों की महिला अपार है। वे ज्ञान के भण्डार, धर्म के मूल स्रोत और भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं। वेद–वाक्य स्वतः प्रमाण हैं तथा अनादि और अपैरुषेय हैं, अतः वेद ब्रह्मस्वरूप हैं।

वेदों की महिमा अपार है। वे ज्ञान के भण्डार, धर्म के मूल स्रोत और भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं। वेद–वाक्य स्वतः प्रमाण हैं तथा अनादि और अपौरुषेय हैं, अतः वेद ब्रह्मस्वरूप हैं।

वैदिक साहित्य में मुख्यतः चार वेद हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद में 10552 मन्त्र हैं, इनका लक्ष्य 'मनुष्य को ज्ञान देना ही है। यजुर्वेद में 1175 मन्त्र हैं, जो उत्तम कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं। सामवेद में 1875 मन्त्र हैं, जिनमें ईश्वर–स्मरण और साधना का वर्णन है। अथर्ववेद का विषय योग है। 'अथर्व' शब्द का शाब्दिक अर्थ (अ+थर्व) एकाग्रता से है। इस वेद के 5177 मन्त्रों में राष्ट्र धर्म, समाजव्यवस्था, गृहस्थ धर्म, अध्यात्मवाद, प्रकृतिवर्णन आदि का विस्तृत एवं व्यावहारिक ज्ञान समाहित है।

वेद–वाक्य राष्ट्रप्रेम, देशसेवा और उत्सर्ग के प्रेरक हैं, इसलिये वेद आर्यों के सर्वप्रधान तथा सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ हैं। इसी कारण वेदों का आज भी राष्ट्रव्यापी प्रचार है। हमारे देवालयों एवं तीर्थस्थानों में आज भी उनका प्रभाव अक्षुण्ण है। वेदों में अपने गौरवशाली अतीत की झाँकी देखकर आज भी हम अपना मस्तक गर्वोन्नत कर सकते हैं।

वेदों की राष्ट्रियता की उदात्त भावना का भरपूर समावेश है। ऋग्वेद में जगदीश्वर से प्रार्थना की गयी है–

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। [1]

अर्थात्– 'हे जगदीश्वर! आप हमें ऐसी बुद्धि दें कि हम सब परस्पर हिलमिल कर एक साथ चलें, एक–समान मीठी वाणी बोलें और एक–समान हृदयवाले होकर राष्ट्र में उत्पन्न धन–धान्य और सम्पत्ति को परस्पर समान रूप से बाँटकर भोगें। हमारी प्रवृत्ति राग–द्वेषरहित परस्पर प्रीति बढ़ानेवाली हो।'

ऋग्वेद के 'इन्द्र–सूक्त' में जगदीश्वर से स्वराष्ट्र के लिये धन–धान्यवान् पुत्रों से समृद्ध होने की कामना की गयी है–

स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम्।
चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः।। [2]

तात्पर्य यह कि 'हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन्! आप हमें धन–धान्य से सम्पन्न ऐसी संतान प्रदान कीजिये, जो उत्तम एवं अमोघ शस्त्रधारी हो, अपनी और अपने राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ हो तथा न्याय, दया–दाक्षिण्य और सदाचार के साथ जन–समूह का नेतृत्व करनेवाली हो, साथ ही नाना प्रकार के धनों को धारण कर परोपकार में रत एवं प्रशंसनीय हो तथा लोकप्रिय एवं अद्भुत गुणों से सम्पन्न होकर जन–समाज पर कल्याणकारी गुणों की वर्षा करनेवाली हो।'

राष्ट्र की रक्षा में और उसकी महत्ता में ऐसी ही अनेक ऋचाएँ पर्यवसित हैं, जिनमें से यहाँ कुछ का उल्लेख किया जा रहा है, जैसे–

उप सर्व मातरं भूमिम्। [3]

'मातृभूमि की सेवा करो।'
निम्न मन्त्र से मातृभूमि को नमन करते हुए कहा गया है–

नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्या।[4]

अर्थात् 'मातृभूमि को नमस्कार है, मातृभूमि को नमस्कार है।'
यहाँ 'पृथ्वी' का अर्थ मातृभूमि या स्वदेश ही उपयुक्त है। अतः हमें अपने राष्ट्र में सजग होकर नेतृत्व करने हेतु एक ऋचा यह उद्घोष करती है–

वय॒ राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।।[5]

अर्थात् 'हम अपने राष्ट्र में सावधान होकर नेता बनें।'
क्रान्तिदर्शी, शत्रुघातक अग्नि की उपासना–हेतु निम्न मन्त्र में प्रेरित किया गया है–

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्।।[6]

'हे स्तोताओ! यज्ञ में सत्यधर्मा, क्रान्तदर्शी, मेधावी, तेजस्वी और रोगों का शमन करने वाले शत्रुघातक अग्नि की स्तुति करो।'
अथर्ववेद के 'भूमि–सूक्त' में ईश्वर ने यह उपदेश दिया है कि अपनी मातृभूमि के प्रति मनुष्यों को किस प्रकार के भाव रखने चाहिये। वहाँ अपने देश को माता समझने और उसके प्रति नमस्कार करने का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया गया है–

सा नो भूमिर्वि सृजतां पुत्राय मे पयः।।[7]

'पृथ्वीमाता अर्थात् मातृभूमि, मुझ पुत्र के लिये दूध आदि पुष्टिकारक पदार्थ प्रदान करे।'

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।[8]

'भूमि (स्वदेश) मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।'

भूमे मातिर्न धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।[9]

'हे मातृभूमि! तू मुझे अच्छी तरह प्रतिष्ठित करके रख।'

सह्रदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।[10]

'परस्पर ह्रदय खोलकर एकमना होकर कर्मशील बने रहो। तुरंत जन्मे बछड़े को छोड़ने पर गौ जैसे सिंहिनी बनकर आक्रमण करने को दौड़ती है, ऐसे तुम लोग सह्रदयजनों की आपत्ति में रक्षा के लिये कमर कसे रहो।'
अतएव हमें चाहिये कि अपनी मातृभूमि की रक्षा–हेतु आत्मबलिदान करने के लिये हम सदा तत्पर रहें–

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिह्रतः स्याम।।[11]

'हे मातृभूमि! तेरी सेवा करने वाले हम नीरोग और आरोग्यपूर्ण हों। तुमसे उत्पन्न हुए समस्त भोग हमें प्राप्त हों, हम ज्ञानी बनकर दीर्घायु हों तथा तेरी सुरक्षा–हेतु अपना आत्मोत्सर्ग करने के लिये भी सदा संनद्ध रहें।'
इस प्रकार वेद ज्ञान के महासागर हैं तथा विश्व–वाङ्मय की अमूल्य निधि एवं भारतीय आर्यसंस्कृति के मूल आधार हैं। उनमें राष्ट्रप्रेम की उदात्त भावना का भरपूर समावेश है। अतः हम सभी राष्ट्रवासियों को चाहिये कि हम राष्ट्ररक्षा में समर्थ हो सकें, इसके लिये वेद की शिक्षाओं को समग्र रूप से ग्रहण करें।

संदर्भ

1. ऋग्वेद 10/111/2
2. इन्द्रसूक्त 10/47/2
3. ऋग्वेद 10/18/10
4. यजुर्वेद 9/22
5. यजुर्वेद 9/23
6. सामवेद 1/1/32
7. अथर्व. 12/1/10
8. अथर्व. 12/1/12
9. अथर्व. 12/1/63
10. अथर्व. 3/30/1
11. अथर्व. 12/1/62